ग्रामीण सहभागी मूल्यांकन (पी.आर.ए.) (Participatory Rural Appraisal) द्वारा सूक्ष्म नियोजन

पी.आर.ए. क्या है ?

- ❖ पी.आर.ए. एक ऐसी तकनीक है जो ग्रामीणों की आवश्यकताओं और उनकी आकांक्षाओं का निर्धारण करने में वन कर्मचारियों तथा अन्य विकास कार्यकर्ताओं की मदद करती है।
- ❖ इस तकनीक से ग्रामीणों की आवश्यकताओं की प्राथमिकताओं का निर्धारण सुगमता से हो जाता है।
- ❖ यह तकनीक गांव में उपलब्ध संसाधनों की जानकारी कुछ ही समय में उपलब्ध करा देती है।
- ❖ इस तकनीक से ग्रामीणों की समस्याओं का समाधान उन्हीं के माध्यम से होता है अतः वे लोग योजना से अपना लगाव महसूस करते हैं।
- ❖ यह तकनीक ग्राम में उपलब्ध संसाधनों के अलावा बाहर से क्या–क्या संसाधन उपलब्ध कराने हैं की जानकारी देती है।
- ❖ यह तकनीक लिखित, कलिष्ट शब्दावली तथा तकनीकी भाषा से नहीं जुड़ी होती। इसमें एक ही स्थान पर अनेक लोगों से व्यवहारिक विचार–विमर्श होता है। अतः यह पद्धति गांव की रूपरेखा व अन्य जानकारियां प्राप्त करने के लिए तथा सीखने व समझने के लिए एक लचीली, उपयुक्त एवं व्यवहारिक पद्धति है।
- ❖ यह तकनीक ग्रामीणों की वास्तविक समस्याओं को उनके नजरिए (दृष्टिकोण) से देखने व समझने का अवसर उपलब्ध कराती है।
- ❖ यह तकनीक एक गांव / ढाणी / फला / चक की सीमाओं में रहने वाले लोगों की जीवन पद्धति का विश्लेषण करती है और यही सूक्ष्म नियोजन की आवश्यकता है।
- ❖ यह तकनीक इस मान्यता पर आधारित है कि ग्रामवासी अपने सीमित पर्यावरण में रहने व उसी में विकास करने की कला बाहरी व्यक्तियों से ज्यादा अच्छी तरह जानते हैं। अतः उनकी समस्याओं के समाधान उन्हीं के पास होते हैं। यदि समस्याओं के समाधान उनकी सलाह से हो तो लक्ष्यों की प्राप्ति अधिक शीघ्रता से हो सकती है।
- ❖ इस तकनीक में परम्परागत शोध विधियों से कम लागत आती है तथा कम समय में तथ्यों एवं घटनाओं का विश्लेषण कर तुरंत निर्णय पर पहुंचा सकता है।
- ❖ पी.आर.ए., चित्रों, संकेतों तथा स्थानीय उपलब्ध कंकर, पत्थर, पत्तों, रंगों आदि की सहायता से जमीन पर या ड्राईंग शीट पर होता है अतः इसमें निरक्षर तथा कम पढ़े–लिखे लोगों की सहभागिता भी प्राप्त होती है।
- ❖ इस तकनीक के प्रयोग से नियोजन एवं मूल्यांकन के सभी चरणों में पारदर्शिता एवं स्पष्टता रहती है।

यह तकनीक ग्रामीणों एवं वन कर्मियों के मध्य पुराने विवादों का निपटारा करती है तथा सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध कायम करती है।

पी.आर.ए. किसलिये किया जाता है ?

पी.आर.ए. सूक्ष्म नियोजन के लिए किया जाता है। इससे सूक्ष्म नियोजन के लिए निम्न तथ्य सुगमता से प्राप्त हो जाते हैं :

1. गांव के संसाधनों की जानकारी
2. ग्रामीणों की आवश्यकताओं का आंकलन एवं उनकी प्राथमिकताओं का निर्धारण
3. विकास कार्यक्रमों की सम्भावना एवं उनकी रणनीति का निर्धारण
4. नवीन सूचनाएं
5. फीड बैक (feed back)
6. ग्रामीणों की भावी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आवश्यक रणनीति बनाने में सुगमता रहती है।
7. चराई की वर्तमान एवं भावी आवश्यकता
8. जनसंख्या एवं पशुगणना
9. वन क्षेत्र एवं वन्यजीव की वर्तमान उपलब्धता
10. ग्रामीणों की सहभागिता की मात्रा व प्रकार

पी.आर.ए. कैसे शुरू करें ?

- जहां का सूक्ष्म नियोजन करना है उस गांव के ग्रामीणों को पूर्व में बताई गई विधियों के अनुसार एकत्र करें।
- ग्रामीणों को एकत्रित करने के लिए गायत्री परिवार, आर्यसमाज या अन्य किसी स्वयंसेवी संस्था का सहयोग लिया जा सकता है।
- इन संस्थाओं के माध्यम से ग्रामीणों को उनके वनों के साथ सह–सम्बन्ध याद दिलाये जा सकते हैं।
- ये संस्थायें धार्मिक आख्यानों के माध्यम से उन्हें वन कर्मियों का सहयोग करने के लिए प्रेरित कर सकती है।
- ग्रामवासियों से पूछे जाने वाले प्रश्नों की एक सूची तैयार करलें किन्तु यह ध्यान रहे कि सूची उन्हें नहीं दी जानी है।
- सूची आपकी सुविधा के लिए है ताकि कोई प्रश्न छूट न जावे।
- सभी समस्याएं और समाधान चर्चा व विचार विमर्श के दौरान ही जानने हैं। स्पष्ट प्रश्न पूछने से अनेक बार वास्तविक तथ्य सामने नहीं आ पाते हैं।
- पी.आर.ए. के लिए आवश्यक सभी वस्तुएं अपने साथ रखें यथा सम्भव स्थानीय साधनों का उपयोग करें।
- पी.आर.ए. करते समय निम्न बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए :
    1. जहां तक सम्भव हो स्थानीय भाषा का प्रयोग करें यदि आपको इसका ज्ञान नहीं है तो दुभाषिया साथ रखें।
    2. लोगों के दुःख दर्द में सहभागी बनकर उनसे अपनेपन के रिश्ते कायम करें।
    3. लोगों से सम्बन्ध बनाकर उनके व्यवहार कों पहचान कर उनका विश्वास जीतें।
    4. स्वयं निष्पक्ष हो जायें अर्थात अपनी कोई विशिष्ट राय के साथ कार्य न करें।
    5. आपके सम्मुख अनेक लोग होते हैं अतः कई व्यक्तियों, वर्गो तथा प्रक्रियाओं से लागोंसे बात करें तथा धैर्य से सब की सुनकर तथ्यों को एकत्रित करें।
    6. अपनी भूलों में सुधार करना सीखें।

7. गांव में प्रचलित एवं उपलब्ध ज्ञान तथा कार्य करने की प्रक्रियाओं की जानकारी करें तथा उनहें नवीन टेक्नोलोजी के साथ–साथ प्राचीन परम्पराओं का पालन करने के लिए भी प्रोत्साहित करें।
8. अपने को उन्हीं में से एक समझें।
9. यह हमेशा ध्यान रखें की कुछ भी सीखने के लिए सुनना पहली शर्त है। यदि आपको सुनने की आदत है तो आप जल्दी ही ग्रामीणों की जीवन शैली व अन्य बातें समझ सकेंगे। सुनी हुई बातों पर गहन चिन्तन करने से आप तथ्यों का सही विश्लेषण कर सही परिणाम पर पहुंच सकेंगे।
10. पी.आर.ए. का सबसे बड़ा लाभ ये है कि यदि आपको लगे कि आप गलत परिणाम पर पहुंचे हैं तो तुरन्त ग्रामीणों से विचार–विमर्श कर उसे ठीक कर सकते हैं। ?

पी.आर.ए. की विभिन्न तकनीकें क्या हैं ?

प्रत्येक गांव का पर्यावरण वहां रहने वाले समुदायों, वहां की भूमि, क्षेत्र, वर्षा, उपलब्ध संसाधन कृषि करने के तरीकों, पशु, वृक्ष एवं वन क्षेत्र, मजदूरी तथा अन्य रोजगार, साख, अनुभव, ज्ञान, परम्परायें तथा सामाजिक संगठनों से बनता है। इस पर्यावरण को समझना ही पी.आर.ए. का प्रमुख उद्देश्य है। इसे समझने के लिए पी. आर.ए. की अनेक तकनीक है। वन कार्मिकों की सुविधा के लिए कुछ तकनीक यहां दी जा रही है। इस क्षेत्र में विशेष ज्ञान के लिए पी.आर.ए. से सम्बन्धित अन्य पुस्तकें पढ़ी जा सकती हैं।

1. गांव का सामाजिक मानचित्र (Social Mapping)
    - इस मानचित्र का निर्माण स्वयं ग्रामीणों से करवाया जाता है। इससे ग्रामीणों की सहभागिता बढ़ती है व उनमें विश्वास पैदा होता है।
    - गांव की किसी समतल भूमि पर या बड़ी ड्राईंगशीट या कागज पर गांव वालों से गांव का पूरा नक्शा बनवाया जाना चाहिए।
    - धरातल पर नक्शा बनाया जा रहा हो तो अलग–अलग तरह की रंगोली, चॉक आदि का प्रयोग करें तथा कागज पर बनाया जा रहा हो तो अलग–अलग रंगों के पैन प्रयोग करें।
    - नक्शा वहां से शुरू करें जहां आप लोग खड़े हैं इसके पश्चात गांव की सड़के, घर, पेयजल स्त्रोंत, मन्दिर, मस्जिद, स्कूल, आंगनबाड़ी, पंचायत भवन, बड़े व प्राचीन वृक्ष बनवायें।
    - इससे गांव की सम्पूर्ण स्थिति आपके सामने स्पष्ट हो जायेगी। इस प्रक्रिया से जनगणना व पशुगणना भी की जा सकती है।
    - यह नक्शा चर्चा का अच्छा अवसर उपलब्ध कराता है। इसमें कई लोगों की सहभागिता होती है। यह गांव के विकास कार्यक्रमों की आवश्यकताओं की मूलभूत जानकारी उपलब्ध कराता है।

2. संसाधन मानचित्र (Resource Map)
    - सामाजिक मानचित्र की भांति ही तैयार कराए

- यह नक्शा गांव के संसाधनों यथा भूमि, जंगल, पहाड़, भू–उपयोग की स्थिति, सिंचाई का क्षेत्र, जलग्रहण, नदी, नाले व अन्य जल स्त्रोत इत्यादि की जानकारी देता है।
- यह मानचित्र संसाधनों की स्थिति स्पष्ट करता है। अतः इसके माध्यम से बंजर भूमि विकास कार्यक्रम, चारागाह विकास, मृदा एवं जल संरक्षण तकनीकों, वृक्षारोपण तथा इसमें लगाई जाने वाली प्रजातियां, फैंसिंग की व्यवस्था आदि के निर्णय में इसका उपयोग किया जा सकता है।

3. **समय रेखा** (Time Sketch)
   - गांव के इतिहास या किसी विशेष घटित घटनाओं को जानने के लिए इसका उपयोग किया जाता है।
   - इस विधि में एक रेखा धरातल या कागज पर खेंचकर ग्रामीणों से घटनाओं को क्रमवार बताने को कहा जाता है जिनका अंकन कर लिया जाता है। ?
   - यह तकनीक वृक्ष व वनों तथा वन्य जीवों की उपलब्धता, कटान के कारणो, अकाल की स्थिति तथा वृक्षारोपण के प्रयासों आदि का क्रम दर्शाती है जो भावी प्रबन्ध योजना व सूक्ष्म नियोजन करने में सहयोग देती है।
4. **क्षेत्रीय भ्रमण** (Collaborative Transact)
   - यह भ्रमण कार्यक्रम ग्रामीणों के साथ–साथ पूरे गांव व उसकी सीमाओं पर करना चाहिए।
   - यह प्रक्रिया गांव के भौतिक संसाधनों को स्पष्ट करती है। साथ ही गांव वालों से खुली चर्चा का अवसर उपलब्ध कराती है।
   - इस चर्चा में वनों की प्राचीन स्थिति, विनाश के कारण, सामुदायिक भूमियों का वर्तमान उपयोग व भावी उपयोग की इच्छा, मृदा एवं जल प्रबन्ध पर विशेष चर्चा की जा सकती है।
   - भ्रमण के समय भूमि का प्रकार, नाले, नदियां, खेत, सड़क, मृदा, घास, झाड़ियां, पेड़, पशु, प्रमुख समस्याएं, गांव में उपलब्ध सुविधाओं का आंकलन किया जा सकता है।

5. **वरीयता श्रेणीकरण** (Ranking)
   - इस विधि में ग्रामीणों से किसी विशेष कार्य अथवा वस्तु की वरीयता (प्राथमिकता) का निर्धारण कराया जाता है। उदाहरणार्थ यदि चारा विकास चर्चा का विषय है तो उनसे गांव में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के चारे की सूची बनाकर उनको प्राथमिकता देने को कहा जाता है। इससे यह ज्ञात हो सकेगा कि ग्रामीणों की चारे की प्राथमिकता क्या है व कौन से चारे को अधिक या कम पसन्द करते हैं।
   - इसी प्रकार उनकी भावी मांगों की प्राथमिकता या श्रेणीकरण भी किया जा सकता है।
   - यह विधि ग्रामीणों की वन उपज की मांगों का निर्धारण करती है जो वन विकास की रणनीति का मुख्य आधार बनती है।

   इन मुख्य विधियों के अतिरिक्त आर्थिक स्तर श्रेणीकरण भी किया जाता है जो ग्रामीणों के आर्थिक स्तर को दर्शाता है। मौसमी निर्धारण मौसम के वर्ष

भर के उतार–चढाव को दर्शाने के लिए समय रेखा के अनुरूप ही किया जाता है। चपाती चित्रांकन विधि ग्रामीणों के मध्य आपसी व अन्य संस्थाओं से सम्बन्ध जानने के लिए किया जाता है। इस विधि से गांव का सामाजिक सम्बन्ध व प्रभावशाली व्यक्तियों की जानकारी की जाती है। गांव के असामाजिक तत्वों तथा कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में बाधा डालने वालों का पता भी चपाती चित्रांकन विधि से सुविधा से किया जा सकता है। अर्द्ध संरचनात्मक साक्षात्कार भी पी.आर.ए. क एक प्रमुख विधि है। यह अनौपचारिक प्रश्नावली के माध्यम से किये जाते हैं तथा सूचनाएं पूछ–पूछ कर संकलित कर परिणाम प्राप्त किये जाते हैं।

पी.आर.ए. का क्रम क्या होगा ?

- पी.आर.ए. करने के निम्न क्रम से कार्य करना चाहिए।
  1. सर्वप्रथम गांव / क्षेत्र का चयन करें।
  2. फिर गांव में पहुंच कर ग्रामीणों से अच्छे सम्बन्ध बनाएं।
  3. फिर पी.आर.ए. की तकनीकों से गांव के तथ्यों का संकलन इस प्रकार करें।
     1) गांव का सामाजिक मानचित्र बनवाकर गांव के बारे में सूचनाएं एकत्र करें। इस मानचित्र से गांव की जनसंख्या, पशुसंख्या, सामाजिक वर्गीकरण, गांवी की भौगोलिक स्थिति, गांव की अर्थ व्यवस्था के आधार, गरीबी की स्थिति आदि की जानकारी की जा सकती है।
     2) इस मानचित्र के तुरन्त बाद ग्रामीणों से संसाधन मानचित्र बनवाकर गांव व उसके आसपास उपलब्ध संसाधनों की उपलब्धता व उन पर ग्रामीणों की आश्रितता की गणना करें। यह संसाधन मानचित्र गांव में उपलब्ध भूमि और उसका प्रकार, जल, वन क्षेत्र, वन्यजीव, तालाब, कुएं आदि की सम्पूर्ण जानकारी एक साथ उपलब्ध करा देगा। इससे साझा वन प्रबन्ध कार्यक्रम की सम्भावनाओं का पता लगाने, योजनाओं में प्राथमिकता तय करने तथा पय्रावरण के प्रति लोगों के विचार एवं सोच की जानकारी उपलब्ध हो सकेगी।
     3) यहीं पर ग्रामीणों से समय रेखा बनवाकर गांव के वनों के संकुचन एवं वन्यजीवों के कम होने का क्रम, कारण व समय भी ज्ञात किया जा सकता है। इसे करने से वृक्षारोपण में प्रजातियों के चयन में सुविधा रहेगी और संकुचन के कारणों का निवारण हो सकेगा।
     4) समय रेखा के साथ–साथ ही मौसम निर्धारण रेखा बनवाकर गांव के मौसम के उतार चढ़ाव की जानकारी भी कर लें।
     5) इसके पश्चात ग्रामीणों से श्रेणीकरण एवं वरीयता निर्धारण करवाकर उनकी पसंद व आकांक्षाओं का अंकन कर लें।
     6) इसके पश्चात गांव का भ्रमण कर गांव के संसाधनों व सामाजिक संरचनाओं को स्व्यं देखकर अनुभव करें। इस भ्रमण से आपको यह जानकारी हो सकेगी कि गांव की

फसलों व खेतों की हालत क्या है । वे कौन–कौनसे उपयोगी वृक्षों का रोपण या देखभाल करते हैं तथा और कौन–कौनसी प्रजातियां उन्हें हितकर है तथा गांव मे कौनसी मूलभूत सुविधा का अभाव है। यह जानकारी योजना निर्माण में सहायक होती है।

4. इन तथ्यों के आधार पर समस्याएं ढूंढें।
5. समस्याओं के समाधान या विकास के विकल्प तलाशें।
6. फिर इन प्राप्त विकल्पों का क्रम निर्धारित करें अर्थात कम से कम संसाधनों में बढ़िया काम कैसे हो सकते हैं उनके सारे तरीके क्रम से जमाएं।
7. यह कार्य योजना ही तो प्रबन्ध योजना है।
8. इसके क्रियान्वयन की उच्चाधिकारियों से तकनीकी एवं प्रशासनिक स्वीकृति प्राप्त करें।

पी.आर.ए. से प्रबन्ध योजना बनाने तक क्या सावधानियां रखें ?

- भाषण देने की प्रवृति छोड़ दें लोगों को ध्यान से सुने।
- स्वयं चुप रहकर लोगों की गतिविधियां देख कर सीखने, समझने व विश्लेषण कर परिणाम पर पहुंचें।
- पी.आर.ए. का समय गांववासियों की सुविधानुसार रखें।
- आपके सभी प्रश्न क्यों ? कब ? कहां ? कैसे ? तथा क्यों ? पर आधारित हों। अपनी तरफ से कोई सुझाव अन्त तक न दें।
- पी.आर.ए. आपके धैर्य की परीक्षा है आपका धैर्य एक अच्छी योजना बनाने में मददगार होगा।
- लोक प्रचलित दंत व पौराणिक कथाओं से प्रभावित न हों।
- पी.आर.ए. का कार्य तसल्ली का है इसमें जल्दबाजी न करें।
- पी.आर.ए. एक उबाऊ कार्यक्रम नहीं है ग्रामीणों के साथ मिलकर इसका आनन्द लेवें।
- अच्छी बात पर लोगों की तारीफ करें, पीठ अथवा कन्धा थपथपाएं तथा ऐसे अनेक कार्य करें जिससे गांववासी उत्साहित होकर स्वतंत्र, बंधनमुक्त चर्चा करने के लए आगे आएं।
- आप इस तथ्य को भली–भांति समझ लें कि समस्याएं जिनकी है समाधान भी वही जानता है। आपने उनकी तकलीफें नहीं देखी हैं अतः उनका ईलाज आप नहीं तलाशें। उन्हीं से समाधान पूछें। यही आपकी प्रबन्ध योजना की सफलता का वास्तविक आधार होगा।